बिहार सरकार

FACES

दैनिक जागरण

Didarganj Chowry Bearer Centenary Year

Open Letter Competition

Organized by FACES (Foundation for Art Culture Ethics & Science), Patna in collaboration with the Department of Art Culture & Youth (Directorate of Museum) Govt. of Bihar

Media Partner: Dainik Jagran, Patna

INTRODUCTION

Didarganj Yakshi (Didarganj Chowry-Bearer) is a world famous female figure sculpted in round in Chunar-sandstone, dated 300 BC (Mauryan period) and exhibited at Patna Museum Patna. Patna is better known abroad for this legendary icon which is housed in the museum of this city, rather than anything else. Many of the features of this sculpture have been judged superior to those of the famous antiques of the world, such as Venus-de-Milo and Mona Lisa. Therefore it is very important that our children must know this icon well. With the objective to make students well aquatinted with this figure, FACES organized an Open Letter Competition on subject "Didarganj Yakshi : Introduction, History and Art", for students of 9th to 12th class. The event was collaborated by the Directorate of Museum, Govt. of Bihar. Dainik Jagran, Patna was media-partner in this programme. Another objective of this competition was to improve the appetite of children for cultural heritages and respect for historical monuments / antiquities. Students learned a lot about their glorious past through this competition because participation in this competition required some research to collect information about the sculpture; and naturally, while browsing for information one learns many things in context.

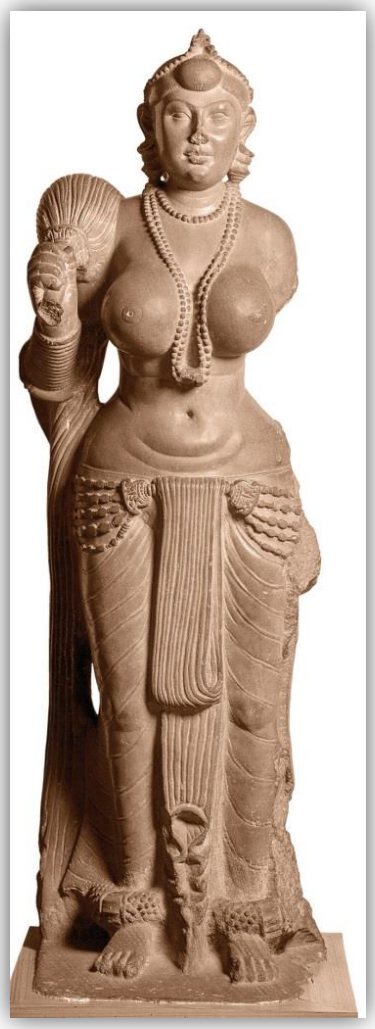

DESCRIPTION

Schools were invited to take part in this event two weeks prior to the scheduled date 23 November 2016. Students were asked to write and submit an open letter on the subject to the office of the Patna Museum, Patna. 51 students from 20 schools were selected to recite the letter before a panel of the judges comprising of three scholars of the subject. On 23rd of November 2017 all selected students read out their letters before the panel. Among them three letters were judged for 'winner' prizes and five students were selected for 'consolation' prizes. The prizes were distributed by the Chief Guest of the event Dr. V. K. Jamuar, Head of the Department of Ancient History and Archaeology, Patna University, Patna.

The event started at 11 AM and concluded at 4 PM in the auditorium of Patna Museum, Patna.

Lunch was arranged for the participants, guest teachers and audience by the organizers at 1 PM in the quiet and lush green campus of Patna Museum. After the completion of the second session (post lunch) reading, at 4 PM the names of the winners were announced by the judges and the prizes were distributed.

Inauguration

Secretary of **FACES** inaugurates the event along with the Curator of Patna Museum & the Judges.

The Judges

Dr. Shiv Kumar Mishra,
Research Director, Patna Museum, Patna.

Dr. Umesh Chand Dwivedi,
Ex. Director Patna Museum Patna.

Dr. Chitranjan Prasad Sinha,
Ex. Director Kashi Prasad Jaiswal Research Institute, Patna.

Media Coverage & Testimonials

Dainik Jagran

बच्चों का आत्मविश्वास

विरासत की रक्षा के लिए युवाओं को प्रेरित करने का यह एक अच्छा प्रयास है। इन्हें प्रेरित कर के हमें भविष्य में काफी फायदा होगा। ऐसे कार्यक्रमों से स्कूल, कॉलेज के छात्र-छात्राओं को अपनी विरासत के प्रति रुचि बढ़ेगी। बाद में वो इसे संभाल सकेंगे। युवाओं में चीजों को समझने और उसे ग्रहण करने की अद्भूत शक्ति रहती है। साथ ही इस तरह के कार्यक्रमों से बच्चों का आत्मविश्वास भी काफी बढ़ता है। उनके बोलने व लिखने की शैली भी काफी हद तक सुधर जाती है। वो अंतर्मुखी नहीं रहते हैं।

डॉ उमेश चंद द्विवेदी
पूर्व निदेशक संग्रहालय, बिहार

जज की राय

विरासतों के प्रति जागरूकता

प्राचीन मूर्तियों के बारे में जागरूक करने के लिए यह एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। ऐसे कार्यक्रमों से अपनी विरासतों के प्रति लोगों की जागरुकता बढ़ेगी। विरासत को बचाने के अब तक जितने भी कार्यक्रम हुए हैं उनमें यह सबसे बढ़िया है। इससे बच्चों की बोलने, लिखने व सुनने की क्षमता बेहतर होती है।

डॉ. चितरंजन प्रसाद सिन्हा, पूर्व निदेशक, कासी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान, पटना

एतिहासिक धरोहर की जानकारियां

पटना संग्रहालय में कला संस्कृति और एतिहासिक महत्व के विषयों पर हमेशा कार्यक्रम होते रहे है। चामर-ग्राहिणी यक्षिणी शताब्दी -वर्ष के मौके पर आयोजित इस ओपन -लेटर प्रतियोगिता में बच्चों ने अच्छी प्रस्तुति दी । इस प्रकार के कार्यक्रम से बच्चों के बीच हमारे एतिहासिक धरोहर की जानकारियां वृहत स्तर से पहुंच पाती है।

यहां हुए आलेख प्रतियोगिता में बच्चों की भागिदारी और उनके वाचन से इसकी झलक मिलती है ।

डॉ शिव कुमार मिश्र

यक्षिणी को निहारते और लेखन कला को निखारते रहे बच्चे

पटना संग्रहालय में बुधवार का दिन कला निहारने से अधिक कला निखारने का दिन था। राजधानी के सुप्रतिष्ठित 15 स्कूलों के 51 बच्चे अपनी कला निखार रहे थे। अपनी लेखन कला। विश्व विख्यात कलाकृतियों में से एक चामर ग्राहिणी यक्षिणी शताब्दी वर्ष पर आयोजित आलेख प्रतियोगिता में कार्मल स्कूल की अमृता भारद्वाज को प्रथम, आर्मी पब्लिक स्कूल की शालिनी को द्वितीय व कार्मल स्कूल की ही हर्षा को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। इस दौरान प्रतिभागियों ने अपने मंच से अपने आलेख की प्रस्तुति भी दी। निर्णायक मंडल में संग्रहालय के पूर्व निदेशक डॉ. उमेश चंद द्विवेदी, काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान के पूर्व निदेशक डॉ. चितरंजन प्रसाद सिन्हा व पटना संग्रहालय के शोध निदेशक डॉ. शिव कुमार मिश्र शामिल थे।

मुख्य अतिथि पटना विश्व विद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. वीके जमुआर ने विजेता पुरस्कृत छात्रों को ट्राफी और प्रमाण पत्र दिए। इसके साथ ही सभी छात्रों को सहभागिता प्रमाण पत्र दिया गया। इस मौके पर अपने संबोधन में एफसीईएस की सचिव सुनीता भारती ने छात्रों में अपनी सांस्कृतिक और एतिहासिक विरासत के प्रति अभिरुचि पैदा करने को ले संस्था के द्वारा भविष्य में भी इस तरह के कार्यक्रमों के आयोजन की घोषणा की। उन्होंने कहा कि यह प्रतियोगिता इस मायने में विशेषता लिए हुए है कि इससे छात्रों को किसी विषय पर शोध करने, सिलसिलेवार ढंग से उसे लिखने एवं एक ओपन फोरम में उसका वाचन करने का अभ्यास और अनुभव एक साथ हुआ।

पटना संग्रहालय में कला संस्कृति एवं युवा विभाग, पटना संग्रहालय व फाउंडेशन फॉर आर्ट, कल्चर, एथिक्स एंड साइंस के संयुक्त तत्वावधान में यह प्रतियोगिता आयोजित की गई। कार्यक्रम का उद्घाटन संग्रहालयाध्यक्ष डॉ. विजय कुमार, एफसीईएस की सचिव अभिनेत्री सुनीता भारती व संग्रहालय के उप संग्रहालयाध्यक्ष डॉ. शंकर सुमन ने किया। कार्यक्रम का मीडिया पार्टनर दैनिक जागरण रहा।

मौके पर पटना संग्रहालय के अध्यक्ष डॉ. विजय कुमार ने कहा कि चामर ग्राहिणी यक्षिणी, मात्र एक पुरातन मूर्ति कला का उदाहरण नहीं बल्कि, एक ऐसी पुरातात्विक कलाकृति है जो हमारी प्राचीन सभ्यता और संस्कृति में अन्तर्निहित उच्च कोटि की कला, तकनीक और समृद्ध सामाजिक व्यवस्था का एक साथ प्रतिनिधित्व करती है। जाहिर है, आलेख लिखने के दौरान, इस कलाकृति के सम्बन्ध में जानकारी संग्रह करते हुए, छात्रों के सम्मुख उनके गौरवमयी अतीत के कुछ पन्ने अवश्य खुले होंगें, जिससे उनमें आत्म-सम्मान, गौरव और क्रियाशीलता का संचार अवश्य हुआ होगा। इस प्रतियोगिता का यही उद्देश्य है और इसीलिए यह प्रतियोगिता, आम प्रतियोगिताओं से हट कर है और महत्वपूर्ण है।

बुद्ध मार्ग स्थित पटना संग्रहालय सभागार में चामर ग्राहिणी शताब्दी वर्ष पर आयोजित आलेख प्रतियोगिता समारोह के दौरान पुरस्कृत प्रतिभागी व अतिथि। जागरण

Event Report: **FACES**, Patna. Full report on www.faces.org.in

Sahara

youth कैंपस

फ्लाई ऐश से बनीं ईंटों को प्रोत्साहित करने के लिए राज्य सरकार ने 'एक टास्क फोर्स' का गठन किया है। — डॉ. नवीन कुमार, बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण पर्षद्

पटना। बृहस्पतिवार • 24 नवम्बर • 2016 | राष्ट्रीय सहारा | www.rashtriyasaha

प्रतियोगिताओं में मारी लड़कियों ने बाजी

'चामर-ग्राहिणी यक्षिणी' शताब्दी वर्ष पर आयोजित आलेख प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार छात्रा अमृता भारद्वाज, द्वितीय पुरस्कार शालिनी कुमारी और तृतीय पुरस्कार हर्षा को प्रदान किया गया

सहारा न्यूज ब्यूरो

पटना। चामर-ग्राहिणी यक्षिणी' शताब्दी-वर्ष पर ओपन-लेटर (आलेख) प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। आयोजन पटना संग्रहालय के सभागार में कला-संस्कृति एवं युवा विभाग (संग्रहालय निदेशालय) और संस्था फाउंडेशन फॉर आर्ट, कल्चर,

प्रतियोगिता में हिस्सा लेता छात्र।

एथिक्स एंड साइंस के तत्वावधान में किया गया। इस प्रतियोगिता में छात्र-छात्राओं ने चामर-ग्राहिणी यक्षिणी : परिचय, ऐतिहासिकता और कला-पक्ष पर इतिहासज्ञों की एक निर्णायक मंडल के समक्ष अपने आलेख प्रस्तुत किये। प्रतियोगिता में विभिन्न विद्यालयों से करीब 50 छात्र-छात्राओं और उनके शिक्षकों ने भाग लिया।

निर्णायक मंडल ने तीन छात्रों को उनके सर्वोत्तम आलेखों के लिए पुरस्कृत किया। प्रथम पुरस्कार कार्मेल उच्च विद्यालय की 12वीं की छात्रा अमृता भारद्वाज, द्वितीय पुरस्कार आर्मी पब्लिक स्कूल की10वीं की छात्रा शालिनी कुमारी और तृतीय पुरस्कार भी कार्मेल उच्च विद्यालय की 10वीं की छात्रा हर्षा को प्रदान किया गया। वहीं पांच छात्र-छात्राओं को सांत्वना पुरस्कार दिया गया। सांत्वना पुरस्कार पाने वाले छात्र-छात्राओं में पूर्व मध्य रेलवे विद्यालय, खगौल के हर्षित पाठक, डीएवी पब्लिक स्कूल, बीएसईबी कालोनी के कात्या प्रसाद, अपर्णा शंकर व आयुषी सिंह और गंगा देवी कालेज की रुकसार फातिमा शामिल हैं। इसके साथ ही भाग लेने वाले सभी छात्र-छात्राओं को सहभागिता का प्रमाण-पत्र दिया गया। निर्णायक मंडल के सदस्य डॉ उमेश चंद द्विवेदी (पूर्व निदेशक, संग्रहालय, बिहार), डॉ चितरंजन प्रसाद सिन्हा (पूर्व निदेशक, काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान, पटना) और शिव कुमार मिश्र (शोध सहायक, पटना संग्रहालय, पटना बिहार) थे। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ वीके जमुआर (विभागाध्यक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग, पटना विश्वविद्यालय) ने छात्रों को पुरस्कार प्रदान किये।

कार्यक्रम की शुरुआत में संस्था की सचिव सुनीता भारती ने स्वागत भाषण के साथ ही चामर-ग्राहिणी यक्षिणी की विस्तृत जानकारी दी। पटना संग्रहालय के संग्रहालयाध्यक्ष डॉ विजय कुमार ने इस तरह के आयोजनों के महत्व पर प्रकाश डाला। संचालन अरविन्द कुमार, शुभम सिंह व पुष्कर प्रिय और धन्यवाद ज्ञापन सहायक संग्रहालयाध्यक्ष डॉ शंकर सुमन ने किया।

Event Report: **FACES**, Patna.   Full report on www.faces.org.in

Hindustan, Patna

गुरुवार • 24 नवम्बर 2016

हिन्दुस्तान 20

नवंबर को दूसरी कक्षा से लेकर अंतिम कक्षा तक विभिन्न तरह की प्रतियोगिताएं आयोजित करानी है।

हरिश्चन्द्र सिंह राठौर के संरक्षण में आयोजित हो रही इस कार्यशाला के संयोजक सीबीएस के विभागाध्यक्ष प्रो. राकेश कुमार सिंह हैं।

की पहल

नए जिम के उपकरण

● स्काई वॉकर ● लेग प्रेसर ● एयर वॉकर ● रॉवर ● क्रॉस ट्रेनर ● चेस्ट प्रेस ● स्केटेड पुलर ● पेक डीक ● पारलेल बार ● होरिजोंटल बार ● वेट लिफ्ट ● सिटअप बार्ड ● बैक एक्सपेंसिनर ● मल्टी फंक्सनल ट्रेनर ● ट्रिपल ट्विस्टर।

जिम करने आती हैं सैकड़ों महिलाएं

● इको पार्क में जिम करने रोजाना सुबह और शाम सैकड़ों की संख्या महिलाएं आती हैं। इको पार्क में पटना का एक मात्र ओपेन जिम है। यही वजह है कि इको पार्क में महिलाओं की तादाद हाल में बढ़ी हैं।

यक्षिणी शताब्दी वर्ष पर ओपेन लेटर प्रतियोगिता

पटना | हिन्दुस्तान प्रतिनिधि

पटना संग्रहालय के सभागार में कला-संस्कृति एवं युवा विभाग, फाउंडेशन फॉर आर्ट एंड कल्चर और एथिक्स एंड साइंस की ओर से चामर-ग्राहिणी यक्षिणी शताब्दी-वर्ष पर ओपन-लेटर (आलेख) प्रतियोगिता आयोजित हुई। इसमें छात्रों ने चामर-ग्राहिणी यक्षिणी का परिचय, ऐतिहासिकता और कला-पक्ष पर इतिहासकारों के निर्णायक मंडल के समक्ष अपने आलेख प्रस्तुत किये।

प्रतियोगिता में विभिन्न विद्यालयों से करीब 50 छात्रों और उनके शिक्षकों ने भाग लिया। निर्णायक मंडल के द्वारा तीन छात्रों को पुरस्कृत किया गया। प्रथम पुरस्कार के विजेता कार्मेल उच्च विद्यालय, बेली रोड कक्षा 12 की अमृता भारद्वाज, द्वितीय पुरस्कार आर्मी पब्लिक स्कूल, दानापुर कक्षा 10 की शालिनी कुमारी और तृतीय पुरस्कार कार्मेल उच्च विद्यालय बेली रोड, कक्षा 10 की हर्षा रही। पांच छात्रों को सांत्वना पुरस्कार दिया गया। हर्षित पाठक, कात्या प्रसाद, अपर्णा शंकर, आयुषी सिंह एवं रुकसार फातिमा को मिला। डॉ. वी. के. जमुआर ने सभी मेघावी छात्रों को पुरस्कृत किया। मौके पर अरविन्द कुमार, शुभम सिंह, डॉ. शंकर सुमन, सुनीता भारती शामिल थे।

Dainik Bhashkar, Patna

स्कूली बच्चों ने सुनाई दीदार यक्षिणी की कहानी

पटना • डीबी स्टार

पटना संग्रहालय के सभागार में बुधवार को स्कूली बच्चों ने चामर ग्राहिणी यक्षिणी के इतिहास और इसकी कला के बारे में विस्तार से बताया। यह मौका था यहां कला-संस्कृति एवं युवा विभाग के पटना संग्रहालय और फाउंडेशन फॉर आर्ट, कल्चर, एथिक्स एंड साइंस पटना के संयुक्त तत्वावधान में 'चामर-ग्राहिणी यक्षिणी' के शताब्दी-वर्ष होने के उपलक्ष्य में आयोजित आलेख प्रतियोगिता का। बच्चों ने बताया कि 'चामर-ग्राहिणी यक्षिणी' या दीदारगंज-यक्षिणी एक विश्व-विख्यात कलाकृति है, जो 18 अक्टूबर 1917 को पटना के दीदारगंज में प्राप्त हुई थी। यह वर्तमान में पटना संग्रहालय में सुरक्षित है। इस वर्ष इसकी प्राप्ति को 100 वर्ष पूरे हुए हैं। इस आलेख प्रतियोगिता में विभिन्न स्कूलों के करीब 50 छात्रों और उनके शिक्षकों ने भाग लिया। निर्णायक मंडल के द्वारा तीन छात्र सर्वोत्तम आलेख के लिए पुरस्कृत हुए। इसमें प्रथम कार्मेल हाईस्कूल बेली रोड की अमृता भारद्वाज, दूसरा पुरस्कार आर्मी पब्लिक स्कूल दानापुर की शालिनी, तीसरा पुरस्कार कार्मेल हाईस्कूल बेली रोड की हर्षा को मिला। इसके साथ ही हर्षित पाठक, कात्या प्रसाद, अपर्णा शंकर, आयुषी सिंह, रूकसार फातिमा को सांत्वना पुरस्कार दिए गए। डॉ. उमेश चंद्र द्विवेदी, डॉ चितरंजन प्रसाद, डॉ शिव कुमार मिश्र जज थे। मुख्य अतिथि डॉ वीके जमुआर थे, मंच संचालन अरविंद कुमार, शुभम सिंह और पुष्कर प्रिय ने किया। धन्यवाद ज्ञापन अभिनेत्री और एफएसीइएस की सचिव सुनीता भारती ने किया। पटना संग्रहालय के अध्यक्ष डॉ विजय कुमार, सहायक संग्रहालयाध्यक्ष डॉ शंकर प्रसाद, सुनीता भारती आदि ने यक्षिणी की मूर्ति को लेकर अपनी बात रखी।

म्यूजियम में (बाएं से) जज डॉ. शिव कमार मिश्र, डॉ. उमेश चन्द्र, डॉ. चितरंजन प्र. सिंह।

Aaj, Patna

-फुलवारी-खगौल

पटना
गुरुवार, २४ नवम्बर, २०१६

४

कौमी एकता सप्ताह का आयोजन

पटना (आससे) । पूर्व मध्य रेल में 19 नवम्बर से 25 नवम्बर तक कौमी एकता सप्ताह मनाया जा रहा है। इस अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों का अयोजन किया जा रहा है ।इस अवसर पर बुधवार को विचार गोष्ठी-सह-कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया । कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए मुख्य कार्मिक अधिकारी सुशांत झा ने कौमी एकता सप्ताह के महत्व पर प्रकाश डाला और सभी से इस सप्ताह को सफ्ल बनाने में सहयोग करने का आग्रह किया। कार्यक्रम में विभिन्न विभागों के कर्मचारियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया । विचार गोष्ठी के अंतर्गत वक्ताओं ने कौमी एकता पर अपने-अपने विचार प्रकट किए। इनमें से भूषण कुमार, छबीला प्रसाद सिंह, एस.के.सिंह, पी.के.सिंह, शंभू प्रसाद,शंभू कुमार,नरेश प्रसाद ने विभिन्न कोणों से इसके महत्व को उजागर किया। दूसरे सत्र में कवि गोष्ठी का आयोजन हुआ। इसमें वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी दिनेश चन्द्, राजकिशोर राजन व श्वेता शेखर ने अपनी कविताओं से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया।

अमृता भारद्वाज बनी ओपन लेटर प्रतियोगिता की विजेता

(आज समाचार सेवा)

पटना। कला संस्कृति एवं युवा विभाग (संग्रहालय निदेशालय), पटना संग्रहालय एवं फाउंडेशन फॉर आर्ट, कल्चर, एथिक्स एंड साइंस, पटना के संयुक्त तत्वावधान में बुधवार को चामर-ग्राहिणी यक्षिणी शताब्दी वर्ष (ओपन लेटर) आलेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग, पटना विवि के विभागाध्यक्ष डॉ. वी के जमुआर बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित थे।

अपने संबोधन में डॉ. वी के जमुआर ने कहा कि चामर-ग्राहिणी यक्षिणी एक विश्व-विख्यात कलाकृति है, जो 18 अक्टूबर 1917 को पटना के दीदारगंज में प्राप्त हुई थी और वर्तमान में पटना संग्रहालय में सुरक्षित है। ईसापूर्व तीसरी शताब्दी की यह प्रस्तर कलाकृति अपनी ऐतिहासिकता, कलात्मकता और निर्माण-तकनीक के लिए विश्व-प्रसिद्ध है। वर्तमान वर्ष 2016 इस अदभुत ऐतिहासिक कलाकृति के प्राप्ति का शताब्दी वर्ष है, जिसे बिहार सरकार ने वर्ष 2016-17 को कला-वर्ष के रूप में मानाने का निर्णय लिया है। इस प्रतियोगिता में छात्रों ने (चामर-ग्राहिणी यक्षिणी, परिचय, ऐतिहासिकता और कला-पक्ष पर इतिहासज्ञों की एक निर्णय मंडल के समक्ष अपने आलेख प्रस्तुत किये। प्रतियोगिता में विभिन्न विद्यालयों से करीब 50 छात्रों ने भाग लिया जिसमे अमृता भारद्वाज ने प्रथम, शालिनी कुमारी ने द्वितीय व कुमारी हर्षा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के अंत में निर्णायक मंडल द्वारा विजयी छात्रों को ट्रॉफी एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में स्वागत भाषण सुनीता भारती ने व धन्यवाद ज्ञापन डॉ. शंकर सुमन ने दिया।

Raja Rani Yantra

23.11.2016

8.30	Pahla Daw	52
9.00	Subh	68
9.30	Kiran	64
10.00	Hindustani	37
10.30	Parbat	07
11.00	Lajbab	11

Junior Jagran

जूनियर जागरण 5

इंटरनेट के माध्यम से मुझे से याक्षिणी के बारे में पता चला था। फिर मैंने पटना संग्रहालय आकर इस बारे में और नजदीक से जानकारी मिली।

अभिनव आनंद (कक्षा 9, बीडी पब्लिक स्कूल)

मेरे पापा ने एक बुकलेट लाया था मुझे याक्षिणी के बारे में उसी से जानकारी मिली। अभी उनका शताब्दी वर्ष भी आ रहा है इसलिए और जानकारी विभिन्न अखबारों और पत्रिकाओं से भी मिली। पापा के लाए हुए बुकलेट में काफी अहम और महत्वपूर्ण जानकारियां थी।

आदित्य नारायण सिंह(कक्षा, 9, बीडी पब्लिक स्कूल)

पटना संग्रहालय में सबसे पहले याक्षिणी के बारे में जानकारी मिली। कक्षा छह में मैंने पहली बार इस बारे में अपनी स्कूली किताबों में पढ़ा था फिर जब संग्रहालय आई तो सबसे पहले इस प्रतिमा को देखा। स्कूली शिक्षकों ने ज्यादा जानकारी देने में मदद की।

साक्षी सिंह(कक्षा 10, केंद्रीय विद्यालय)

इस बारे में मुझे सबसे पहले इंटरनेट पर जानकारी मिली। फिर कई सारे पत्र-पत्रिकाओं को मैंने पढ़ा जिसमें इस बारे में विस्तार से बताया गया था। यह हमारे राज्य के लिए गौरव की बात है यहां यह प्रतिमा मिली। सरकार को इसके व्यापर प्रचार करना चाहिए।

शुभांजलि सिंह(कक्षा 11, कार्मेल स्कूल)

जब मैंने इस प्रतियोगिता के बारे में जाना तब ही याक्षिणी के बारे में भी जाना। फिर मैंने कई सारे वेबसाइट्स, किताबें आदि का उपयोग कर के याक्षिणी के बारे में जरूरी जानकारियां जुटाई।

कनीज फातिमा

याक्षिणी के बारे में अपने कॉलेज के शिक्षकों से जानकारी मिली। खासकर इतिहास के शिक्षक ने कई उपयोगी बातें बताई। फिर मैंने इंटरनेट के प्रयोग से अन्य जानकारियां इकट्ठा की।

माया कुमारी (कक्षा, 11, जेडी विमेंस कॉलेज)

इतिहास में मेरी शुरू से रुचि रही है। मुझे पुरानी चीजों के बारे में जानना काफी अच्छा लगता है। याक्षिणी के बारे में मुझे अपने स्कूल के शिक्षकों से जानकारी मिली। फिर मैंने इंटरनेट खंगाला, इससे मेरा और ज्ञानवर्धन हुआ।

हर्ष कुमार(कक्षा 10, डीएवी पब्लिक स्कूल, बोर्ड कॉलोनी)

साल 2011 में मैं पहली बार पटना संग्रहालय अपने परिवार के साथ आई थी। यहीं पर मैंने याक्षिणी की प्रतिमा दिखी। इसके बाद इस बार में मैंने अपने पापा से बात की। उन्होंने मुझे काफी जानकारियां दी।

अमृता भारद्वाज(कक्षा 12, माउंट कार्मेल)

जब मैं सातवीं कक्षा में थी उस समय मुझे याक्षिणी के बारे में पढ़ना था। इतिहास विषय पहले तो मुझे बोरिंग लगता था लेकिन याक्षिणी के बारे में पढ़ कर मेरी इसमें रुचि जागने लगी।

खासकर बिहार के इतिहास को जानना और यहां की विरासत की जानकारी रखना मुझे काफी पसंद है। किताबों में याक्षिणी के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं थी, इसलिए मैंने फिर इंटरनेट की सहायता से और जानकारियां इकट्ठा की।

हर्षा (कक्षा 10, माउंट कार्मेल)

साल 2013 में जब मैं पहली बार संग्रहालय आया था उसी दौरान याक्षिणी को जानने का मुझे मौका मिला था। फिर मेरे परिवार वालों ने मुझे बताया कि पटना के दीदारगंज के पास खुदाई में इनकी प्रतिमा मिली थी। फिर परिवार के लोगों ने ही इनकी सौंदर्य का वर्णन कर इनके बारे में पूरी जानकारी दी।

प्रशांत कुमार(शहीद राजेंद्र सिंह उच्च माध्यमिक विद्यालय)

मैं साल 2000 में पटना संग्रहालय विशेष रूप से याक्षिणी की प्रतिमा देखने आया था। फिर मेरे

पापा ने ग्रंथों से कई सारी कहानियां इनके बारे में बताई। इससे मेरी रुचि भारतीय इतिहास के प्रति जागृत होने लगी। फिर मैंने कई सारे पत्र-पत्रिकाएं और जानकारी जुटाने के लिए पढ़ी।

प्रताप (शहीद राजेंद्र सिंह उच्च माध्यमिक विद्यालय)

पटना संग्रहालय आकर ही पहली बार याक्षिणी के बारे में जाना था। फिर अपनी स्कूल की लाइब्रेरी में कई सारी किताबों को पढ़ने के बाद और जानकारियां जुटाई। साथ ही साथ स्कूल के कई शिक्षकों खासकर इतिहास के शिक्षकों ने ज्यादा अच्छे तरीके से मुझे समझाया।

शालिनी (कक्षा 10, आर्मी पब्लिक स्कूल)

याक्षिणी के बारे में मुझे सर्वप्रथम अखबारों से जानकारी मिली। साल 2012 से मैं इस बारे में जानकारी जुटा रहा हूं। पहली बार 2013 में पटना संग्रहालय में इनकी प्रतिमा को देखा था।

केशव आर्या (राम मोहन रॉय सेमिनरी स्कूल)

साल 2014 में स्कूल की तरफ से पटना संग्रहालय आया था, उसी दौरान स्कूल के शिक्षकों ने याक्षिणी के बारे में बताया था। हालांकि इतिहास मेरा विषय नहीं हैं फिर भी याक्षिणी के बारे में इस ओर मेरी दिलचस्पी बढ़ी। फिर मैंने इंटरनेट और शिक्षकों के सहयोग से इस बारे में और जानकारी जुटाई।

आदित्य प्रताप वर्मा, (कक्षा 10, डीएवी पब्लिक स्कूल, बोर्ड कॉलोनी)

चामर ग्राहिणी यक्षिणी : परिचय, एतिहासिकता और कला पक्ष

प्रथम पुरस्कार

कला को शब्दों में वर्णित कर पाना कठिन है किंतु फिर भी मानव ने कहा है कि कला मानव मन के सर्वस्व कल्पनाओं का प्रत्यक्ष रूप है। कोई भी विशिष्ट कला कलाकार की रचनाशीलता, शिल्पकारिता और कल्पनाशीलता का द्योतक होता है। अलग-अलग शताब्दियों में कला यथार्थवाद, प्रकृतिवाद, आदर्शवाद जैसे विभिन्न मतों को प्रकट करने का श्रोत रहा है।

कला के विविधा रूपों में एक, मूर्ति कला, किसी भी द्रव्य को जीवंत वस्तुरूप में प्रकट करने की कला है। कालखंड के उत्तरार्ध से ही यह अपने त्रिविमीय रूप में प्रकट होती रही है।

भारतीय मूर्ति कला अपनी वास्तविकता व एतिहासिक महत्ता की दृष्टि से विश्व कला पटल पर अपनी अमित छाप छोड़ती है। यह विभिन्न प्रकृति आयामों जैसे जीव-जगत, पौराणिकता, मानवीय मूल्यों इत्यादि का अनूठा समागम रहा है। सिंधु घाटी सभ्यता की मूर्तियाँ, दक्षिण के मंदिरों की नक्काशी, दीदारगंज की यक्षिणी व नटराज मूर्ति जैसी उत्कृष्ट कृतियाँ भारतीय मूर्ति कला के स्वर्णिम इतिहास को अलंकृत करती है।

उन सब में यक्षिणी की मूर्ति अपना एक विशिष्ट स्थान रखती है। यक्षिणी की मूर्ति एक स्त्री की मूर्ति है जो 'यक्षी', 'चामर ग्राहिणी' आदि नामों से भी संबोधित होती है। पौराणिक मान्यता अनुसार यक्ष और यक्षिणी नभचर हैं और अद्‌भुत शक्तियों के स्वामी भी। भारतीय दर्शनशास्त्र व ग्रंथों में भी इनका उल्लेख है। संग्रहालय स्थित इस मूर्ति का नाम 'चामर ग्राहिणी यक्षिणी' इसलिए पड़ा होगा क्योंकि इसकी दायीं हाथ में चामर है और प्रकृति प्रदत अद्‌भुत शक्तियों की स्वामिनी नारी है और नारी मूर्ति होना इसके नाम की सार्थकता है।

निर्माण के 2300 साल पश्चात् 1917 में यक्षिणी की मूर्ति अपनी शिल्पकला को लेकर विद्वानों व पुरातत्विदों में तर्क का केंद्र रह चुकी है। आज भी इस विषय पर संशय है कि मूर्ति किसी यक्षिणी की है, सामान्य चामर धारणी ग्रामीण स्त्री की अथवा किसी ग्राम देवी की। मौर्य सम्राट अशोक द्वारा स्त्रियों को सामाजिक प्रतिष्ठा और वंदनीय स्थान दिलाने का प्रयास हुआ था। विद्वानों ने मौर्यकालीन जगत कल्याण यक्षिणी मूर्ति की उसी प्रयास को साकार करने वाला बताए है। गंगा किनारे दीदारगंज में मिट्टी में उल्टी दबी होने के कारण धोबियों द्वारा अनभिज्ञतावश इसका इस्तेमाल कपड़े धोने के लिए होता था। एक दिन मूर्ति में घुसे साँप को निकालने के क्रम में लोगों को इसकी मौजूदगी का पता चला।

कला के विविध आयामों से समा इस मूर्ति की विशिष्ट है इसकी चमक व मुस्कान। निर्माण के हजारों साल पश्चात् भी इसकी आभ अक्षुण्ण मूर्ति पर अलंकृत है। मूर्ति का निर्माण के भूरे रंग के बलुआ पत्थर से हुआ है। पुरातत्विदों के अनुसार मुख व्याख्या कला को जिस अनूठे व बारीकी से यक्षिणी में उतारा गया है उस लियोनार्डो-डा-विंची की मोना-लिसा में भी नहीं दिखा प्रसिद्ध इतिहासकार अहमद कहते है कि ''सौन्दर्य के काल्पनिक प्रतिमाओं के आधार पर गढ़ी यह प्राचीन मूर्ति है।'' वे इस मूर्ति पर तत्कालीन यूनानी कला का प्रभाव भी मानते हैं।

इतिहास के पन्नों में खोल उस महान मूर्तिकार पर सारी दुनिया आश्चर्यचकित रह जाती है जिसकी कल्पना का अप्रतिम परिणाम है यह मूर्ति। सीधी खड़ी मुद्रा वाली इस मूर्ति में स्त्री शरीर की हर बारीकी को बेहद खुबसूरती के साथ उकेरा गया है। मूर्ति में बड़ी ही कलात्मकता के साथ उकेरा गया है। मूर्ति में बड़ी ही कलात्मकता के साथ वालों को बाँधा गया है और बंधन से निकले बाल लटे बन चेहरे पर बिखरी है। बंधन के ऊपर मोतियों की लड़ी लटकी है। मूर्ति में सुंदरता, मातृत्व व सेवा भाव दिखता है। सुंदरता को दर्शाते आकर्षक नैन-नक्शा व शारीरिक बनावट है। हल्के उठे दारों पाँव से चामर डुलाने की अभिव्यक्ति होती है। इससे मूर्ति में सेवाभाव दिखता है। प्रसव पश्चात् आने वाली महीन लकीरों को मूर्ति के पेट पर उकेर कर मूर्तिकार ने मातृत्व भाव दर्शाया है। मीठी मुस्कान चेहरे पर लिए 160 सेंटीमीटर की इस मूर्ति का ऊपरी भाग खुला है। संपूर्ण शरीर विभिन्न आभूषणों से सुसज्जित है। दाएं कंधे से होते हुए दुपट्टा दाएं हाथ में अटका है।

आलेख : अमृता भारद्वाज

तृतीय पुरस्कार

कला, मैथिलीशरण गुप्त जी के शब्दों में ''अभिव्यक्ति की कुशल शक्ति को ही तो कला कहते हैं।'' जीवन, ऊर्जा का महासागर है। कला जीवन को सत्यम, शिवम्, सुन्दरम् से समन्वित करती है। कला उस क्षितिज की भाँति है जिसका छोर नहीं, इतनी विशाल इतनी विस्तृत अनेक विधाओं को अपने में समेटे, तभी तो कवि मन कह उठा- साहित्य संगीत कला विहीन : साक्षात् पशुः पृच्छ विषाणहीनः।। रविन्द्रनाथ ठाकुर के मुख से निकला ''कला में मनुष्य अपने भावों की अभिव्यक्ति करता है'' तो प्लेटो ने कहा - ''कला सत्य की अनुकृति की अनुकृति है।'' कला ही है जिसमें मानव मन में संवेदनाएँ उभारने, प्रवृत्तियों को ढालने तथा चिंतन को मोड़ने, अभिरुचि को दिशा देने की अद्‌भुत क्षमता है। मनोरंजन, सौन्दर्य, प्रवाह, उल्लास न जाने कितने तत्वों से यह भरपूर है, जिसमें मानवीयता को सम्मोहित करने की शक्ति है, जिसमें मानवीयता को सम्मोहित करने की शक्ति है। कला एक प्रकार का कृत्रिम निर्माण है जिसने शारीरिक और मानसिक कौशलों का प्रयोग होता है। कलाएँ कई प्रकार की होती है जैसे गायन, वादन, वर्तन, नाट्य, आलेख, विशेषक, मूर्तिकला आदि। इन्हीं में से एक है मूर्तिकला। मूर्तिकला या शल्पिकला कला का वह रूप है जो त्रिविमीय होती है। यह कठोर पदार्थ (जैसे पत्थर), मृदु पदार्थ (प्लास्टिक) एवं प्रकाश आदि से बनाये जा सकते हैं। मूर्तिकला एक अतिप्राचीन कला है। भारत की मूर्तिकला तो विश्वप्रसिद्ध है। भारत के वास्तुशिल्प, मूर्तिकला, कला और शिल्प की जड़े भारतीय सभ्यता के इतिहास से बहुत दूर गहरी प्रतीत होती है। भारतीय मूर्तिकला आरंभ में ही यथार्थ रूप लिए हुए है। इसमें मानव आकृतियों में प्रायः पतली कमर, लचीले अंगों एवं तरुण और संवेदनापूर्ण रूप को चित्रित किया जाता है। भारतीय मूर्तियों में पेड़-पौधों और जीव-जन्तुओं से लेकर असख्य देवी-देविताओं को चित्रित किया गया है।

आलेख : हर्षा

द्वितीय पुरस्कार

कोई भी कलाकार जब अपने हाथ में कलम पकड़ता है तब सबसे पहला, जो चित्र वह बनाता है वह नारी का होता है। नारी, इस पूरे विश्व के रचयता यानी ईश्वर की एक ऐसी कलाकृति है जिसके हर गुण एवं हर अंग में सुंदरता कूट-कूट कर भरी हुई है। नारी सृष्टि की अनुपम देन है।

नारी ईश्वर (ईश्वर) की अनुपम देन के साथ, बनाई गई चलती फिरती एक ऐसी मूर्ति हैं जिसमें ममता, प्यार, स्नेह, गुस्सा, करुणा एवं देवी के रूप व रंग का सम्मपूर्ण समावेश है। ऐसे ही एक अद्‌भुत कलाकृति है 'चामर ग्राहिणी यक्षिणी'। जिसकी चमक की चकाचौन्ध हमें मनमोहित कर देती है, एक हि बार में हमारे नजर के पार उतर जाती हैं।

ऐसी मनमोहक मूर्ति ने देखने को कभी मिली थी और ना हि मिलेगी। बहुतो के मन में यह सवाल उठ रहा होगा कि आखिर ये यक्षिणी हैं क्या? क्यों इस मूर्ति को इतनी महत्व दी जा रही है। यक्षिणियों न भगवान होती है और न हम जैसी इंसान। इनके पास शक्तियां तो होती है पर ये परमेश्वर भी नहीं होती। यह स्वर्ग लोक में नोचती या तो अपशरा होती है या फिर देवताओं के आजु-बाजु चामर डोलाने वाली।

निबंध प्रतियोगिता

अब आप सब यही सोच रहे होंगे कि आखिर इस साधारण सी चुनार पत्थर से बनी हुई यक्षिणी के ऊपर आज अचानक से यह भाषन, आलेख व वाद-विवाद आखिर क्यों??

तो जरा, मैं आपको बता दूँ कि ये कोई आम कलाकृति नहीं बल्कि ये मौर्य युगीन लोककला मुख्यतः एक ऐसी मूर्ति है जो कई हजार जब कोई चीज सुंदर होती है तब उसकी चर्चा महान व्यक्तियों के बीच होने लगती है। ''जिस तरह हीरे की परख एक जोहरी को होती है। ठीक उसी प्रकार कलाकृति की परख एक कलाकार को होती है।

कारल, वसुधरा, शरण ऐसे बहुत से लेखकों ने चामर ग्राहिणी यक्षिणी पे अपने कलम की नींव तोर डाली, किंतु यक्षिणी कि सुंदरता की वर्णन में सब असफल रहें।इस ईसापूर्व तीसरी शताब्दी की इस प्रस्तर कलाकृति की ऐतिहासिकता, कलात्मकता और तकनीक का अध्ययन विश्व के सैकड़ों विद्वानों ने किया है, और यह पाया भी कि विशिष्ट कलाकृतियों के मुकाबले चामर ग्राहिणी की मूर्ति श्रेष्ठ है।

आलेख : शालिनी कुमारी

4 25 नवंबर, 2016 — जूनियर जागरण 5

निबंध प्रतियोगिता

विश्व विख्यात कलाकृतियों में से एक चामर ग्राहिणी यक्षिणी शताब्दी वर्ष पर आयोजित आलेख प्रतियोगिता में कार्मल स्कूल की अमृता भारद्वाज को प्रथम, आर्मी पब्लिक स्कूल की शालिनी को द्वितीय व कार्मल स्कूल की ही हर्षा को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। पटना संग्रहालय में कला संस्कृति एवं युवा विभाग, पटना संग्रहालय व फाउंडेशन फॉर आर्ट, कल्चर, एथिक्स एंड साइंस एवं दैनिक जागरण के संयुक्त तत्वावधान में यह प्रतियोगिता आयोजित की गई। कार्यक्रम का उद्घाटन पटना संग्रहालय के संग्रहलायध्यक्ष डॉ. विजय कुमार, एफसीईएस की सचिव अभिनेत्री सुनीता भारती व संग्रहालय के उप संग्रहलायध्यक्ष डॉ. शंकर सुमन ने दीप प्रज्जवलित कर संयुक्त रूप से किया। निर्णायक मंडल में शामिल संग्रहालय के पूर्व निदेशक डॉ. उमेश चंद द्विवेदी, काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान के पूर्व निदेशक डॉ. चितरंजन प्रसाद सिन्हा, व पटना संग्रहालय के शोध निदेशक डॉ. शिव कुमार मिश्र शामिल थे। मुख्य अतिथि पटना विश्व विद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. वीके जमुआर ने विजेता पुरस्कृत छात्रों को ट्राफी और प्रमाण पत्र दिए। इसके साथ ही सभी छात्रों को सहभागिता प्रमाण पत्र दिया गया।

चामर ग्राहिणी यक्षिणी शताब्दी वर्ष

पटना संग्रहालय में बुधवार को चामर ग्राहिणी यक्षिणी : परिचय, एतिहासिकता और कला पक्ष विषय पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त करने के बाद आयोजक मंडल के साथ सफल प्रतिभागी, निर्णायक मंडल।

चामर ग्राहिणी यक्षिणी : परिचय, एतिहासिकता और कला पक्ष

बच्चों का आत्मविश्वास — जज की राय — विरासतों के प्रति जागरूकता — एतिहासिक धरोहर की जानकारियां

ANNOUNCEMENT NEWS

शताब्दी समारोह के मौके पर प्रतियोगिता का आयोजन

बच्चों को सांस्कृतिक विरासत से रूबरू कराने के लिए कला संस्कृति एवं युवा विभाग संग्रहालय निदेशालय आलेख प्रतियोगिता का आयोजन कर रहा है।

फाउंडेशन फॉर आर्ट कल्चर एथिक्स एंड साइंस के संयुक्त तत्वावधान में चामर ग्राहिणी यक्षिणी के प्राप्ति के शताब्दी वर्ष में पटना संग्रहालय में 23 नवंबर को सुबह 11 बजे प्रतियोगिता आयोजित होगी। शैक्षणिक कार्यक्रम में मीडिया पार्टनर के रूप में दैनिक जागरण का सहयोग होगा। प्रतियोगिता में नौवीं से 12वीं तक छात्र भाग ले सकते है। जिन्हें 700 शब्दों में एक आलेख लिखना होगा। चामर-गृहणी यक्षिणी परिचय, ऐतिहासिक और कला पक्ष विषय पर छात्रों को अपनी आलेख प्रस्तुत करना है। तीन प्रमुख आलेखों को पुरस्कृत किया जाएगा एवं तीन सांत्वना पुरस्कार दिया जाएगा। संस्था के सचिव व अभिनेत्री सुनीता भारती एवं संग्रहालय के अध्यक्ष डॉ. विजय कुमार ने कहा कि प्रतियोगिता अपने आप में एक विशेषता लिए हुए है। प्रतिभागियों को आलेख लिखने के दौरान कलाकृतियों के संबंध में जानकारी प्राप्त होगी। साथ ही छात्रों में शोध प्रवृति तथा लेखन और वाचन की क्षमता का विकास होगा।

Event Report: **FACES**, Patna. Full report on www.faces.org.in

The Chief Guest

Sunita Bharti (Actress & Secretary of **FACES**) welcomes Dr. V. K. Jamuar, the chief guest of the event.

Recitation of Open Letters

Students reading their letters during the competition.

Students on Dias

Students Interacting With Reporters

The Audience: Teachers, Students & Guests

Lunch Time

The Winners

1st Prize : Amrita Bhardwaj

CARMEL HIGH SCHOOL, BAILEY ROAD, PATNA

2nd Prize : Shalini Kumari

ARMY PUBLIC SCHOOL, DANAPUR CANTT., PATNA

3rd Prize : Harsha

CARMEL HIGH SCHOOL, BAILEY ROAD, PATNA

Consolation Prizes

Ayushi singh, DAV School, Patna

Katya Prasad, DAV School, Patna

Aparna Shankar, DAV School, Patna

Harshit Pathak, Railway School Khagaul Danapur

Rukhsar Fatima, Ganga Devi College Patna

Prize Winners with Judges, Chief Gest & Organizers

Thanks-giving lecture by the Astt. Curator, Patna Museum, Patna

POSTER OF THE EVENT